माध्यमिक स्तर
लोककला पाठ्यक्रम

भूमिका

भारत एक विशाल देश है जिसका हर कोना अपनी लोककला से समृद्ध है। लोककला में विभिन्न सामाजिक समूहों द्वारा निर्मित विभिन्न वस्तुओं का अंकन होता है जो पारंपरिक जीवन-शैली, संस्कृति और प्रशिक्षण पर आधारित होता है। लोककला सामान्यत: लोगों द्वारा बिना किसी शिक्षा या थोड़ी शिक्षा के साथ या बिना किसी कलात्मक प्रशिक्षण के साथ कला-सृजन की भावना न होते हुए भी बनाई जाती है। लोक कलाकारों ने सदियों से अपने कला को लगातार बनाए रखा है। आज भी वह अपने को सामान्य प्रशिक्षित कलाकार जैसा कलाकार नहीं मानते। ये लोग लोककला का उपयोग अपने घरों को, उपयोगी सामानों को, बर्तनों को, मूर्तियों को व अन्य उपयोग की वस्तुओं को सजाने के लिए करते है। ये लोक कलाकार सामान्यत: अपने पारिवारिक व्यवसाय को करते हुए परंपरागत रूप से शिक्षित होते हैं। ये सामान्य लोग बहुत ही साधारण तरीकों और साधारण सामग्री के प्रयोग से कला का निर्माण करते है। वे आसपास की सामान्य वस्तुओं के प्रयोग से रंगों का और ब्रशों का निर्माण करते है। रंगों का निर्माण विभिन्न वनस्पतियों से और खनिज-पदार्थों से किया जाता है। लोक कलाकार अपनी कला में प्रांतीय विभिन्नता के साथ पारंपरिक प्रतीकों व अलंकारों का प्रयोग करते हैं। ये अलंकरण पशु, पक्षी, पौधों, फूलो और प्रतीक के रूप में होते हैं।

आवश्यकता और तार्किकता

लोककला पीढ़ी-दर-पीढ़ी अनौपचारिक रूप से बिना किसी कलात्मक प्रशिक्षण के चली आ रही है, क्योंकि कलाकारों के लिए शिक्षा व प्रशिक्षण की सुविधा नहीं थी। इसलिए लोककला अपने महत्व को बड़ी मात्र में खो रही है और लोगो को आकर्षित करने व कला को जीवित बनाए रखने में नाकामयाब हो रही है। इसलिए वर्त्तमान समय में लोककला से संबंधी पाठ्यक्रम को शुरू करने की आवश्यकता पड़ी जिससे लोककला को जीवित रखा जा सके।

यह पाठ्यक्रम पढनेवालों को कुशल लोककला के निर्माण के लिए प्रेरित करेगा और लोककला की परंपरा को जीवित रखेगा। यह लोगों में एक प्रेरणा देकर स्रोत के रूप में काम करेगा जो लोगो में लोककला से निर्मित वस्तुओं के प्रति लगाव को बढ़ाएगा और कलाकारों की कलात्मक भावना को संतुष्ट करेगा। इसी के साथ यह पाठ्यक्रम कला कुशलता को बढ़ाएगा और लोगों की आर्थिक सहायता का आधारा बनेगा क्योंकि लोककला में देश-विदेशों में अपने महत्व को साबित करने की पूरी योग्यता है।

उद्देश्य

इस पाठ को पढ़ने के उपरान्त आप :

- लोककला को पहचान सकेंगे;
- अलग-अलग माध्यम, तकनीक व शैली की लोककलाओं का अभ्यास कर सकेंगे;

- लोककला की सराहना के लिए कला के प्रति सौंदर्य बोध व कुशलता का विकास कर सकेंगे;
- अपने घरों के दीवारों, उपयोग की वस्तुओं, बर्तनों, कपड़ों इत्यादि को सजा सकेंगे;
- लोककला के माध्यम से रोज़गार प्राप्त कर सकेंगे।

लक्ष्य-समूह

लोककला के प्रमाणित पाठ्यक्रम के लिए कम-से-कम 14 वर्ष की आयु होनी चाहिए तथा पहले से लोककला के ज्ञान की आवश्यकता नहीं है

शैक्षिक प्रशिक्षण कक्षा 8 तक हो या स्वयं द्वारा कक्षा 8 तक के ज्ञान का प्रमाणपत्र भी मान्य होगा।

पाठ्यक्रम-संरचना

लोककला का माध्यमिक स्तर का पाठ्यक्रम निम्नलिखित पाँच खंडों में विभाजित है–

सिद्धांत 40 अंक

मॉड्यूल 1: लोक व जनजातीय कला की प्रस्तावना

मॉड्यूल 2: माध्यम, तकनीक, शैली

प्रायोगिक : 60 अंक

मॉड्यूल 3 : भित्ति चित्र

मॉड्यूल 4 : ज़मीन पर बने चित्र

मॉड्यूल 5 : चित्रों के अन्य माध्यम

कुल अंक : 100

पाठ्यक्रम का विवरण

सिद्धांत **40 अंक**

मॉड्यूल 1: लोक व जनजातीय कला की प्रस्तावना 20 अंक

प्रस्तावना

कलात्मक अभिव्यक्ति मानव जाति की मुख्य स्वाभाविक प्रवृत्ति है और कला की यह क्रिया उतनी ही पुरानी है जितने पाषण काल के भित्ति चित्र हैं। यह सभी जानते हैं कि लोककला का जन्म प्रारंभिक काल में ही हो चुका था जो आज तक मानव-जाति के लिए लोकप्रिय बनी रही। प्रतीक और चिह्नों से कला के प्रदेश का पता लगाया जा सकता है विषय और स्वभाव से हर प्रदेश की लोककला अलग होती है। हालाँकि कुछ विशेषताओं के कारण इनमे समानता भी होती है। ये कलाएँ विशेष कलाकारों के द्वारा नहीं, सामान्य मानव द्वारा निरंतर प्रस्तुत की जाती है और जीवन का एक विशेष अंग मानी जाती हैं।

पाठ 1: लोक व जनजातीय कला की प्रस्तावना

पाठ 2: लोक व जनजातीय कला का परिचय

पाठ 3: कलाकारों और विद्वानों का योगदान

मॉड्यूल 2: माध्यम, तकनीक, शैली 20 अंक

प्रस्तावना

लोककला में मानव-जीवन का सुंदर और साधारण अंकन होता है। ये जहाँ बनाई जाती हैं उस प्रदेश व लोगों की जीवन शैली का अंकन करती हैं। कला के माध्यम, तकनीक और शैली प्राकृतिक वातावरण तथा प्रादेशिक विशेषताओं में उस प्रदेश की परंपरा को दिखाती हैं। लोककला की कलात्मक प्रकृति और आत्मा को समझने के लिए देश की विभिन प्रदेशों की लोककलाओं का अध्ययन किया जा सकता है। देश के कुछ हिस्सों में घरों को सुबह साफ कर दिया जाता है। घर के आस-पास के हिस्सों को धोकर साफ किया जाता है और गिली मिट्टी से लेप किया जाता है। मुख्य दरवाज़े की ज़मीन पर अलंकरण बनाया जाता है जिसे रंगोली कहते हैं। घर के दरवाज़े पर रोज रंगोली बनाना उनकी दिनचर्या का विशेष हिस्सा है। दीवारों और ज़मीन पर बने अलंकार घरवालों के सुखी और शांतिपूर्ण जीवन का प्रतीक माना जाता है। हर उत्सव, अवसर और त्यौहार के लिए अलग-अलग अलंकरण होते है। ये अस्थायी होते है लेकिन मानव के इस विश्वास को दिखाते हैं कि मानव हमेशा अपने परिवेश को और अधिक सुंदर बनाता रहेगा। प्रयोग की जाने वाली सामग्री में सफेद चॉक, चावल का आटा, नींबू और वातावरण में उपस्थित सामग्री होती है।

काम के आधार पर सामग्री बदल दी जाती है और तकनीक या विधि के आधार पर कला को पहचाना जा सकता है, क्योंकि समय के साथ कई नयी तकनीकों को शामिल किया गया है। यह एक रोज़गारपरक पाठ्यक्रम है। विद्यार्थी रूचि के अनुसार रोज़गार का चयन कर सकते है।

पाठ 4 : पारंपरिक और समकालीन विधि और सामग्री

पाठ 5 लोककला के चिह्न और प्रतिक

पाठ 6 लोक व जनजातीय कला का महत्व और उपयोगिता

पाठ 7: संभावना और अवसर

प्रायोगिक **60 अंक**

मॉड्यूल 3 : भित्ति चित्र **20 अंक**

प्रस्तावना

मनुष्यों को अपने वातावरण में सुंदरता अच्छी लगती है इसलिए वे घरों की दीवारों पर, ज़मीनों पर प्रतीकों व चिह्नों से सजावट करते है। यह दर्शाता है कि मनुष्य में सुंदरता के प्रति विशेष लगाव है। वे अपने घरों को कलात्मक आकृतियों से सजाते है। इस प्रकार की चित्रकला कला के क्षेत्र में विशेष स्थान रखती है, उदाहरणस्वरुप कुछ विशेष अवसरों और त्योहारों पर महिलाएँ और लड़कियाँ विशेष प्रकार के अलग-अलग विषयों से संबंधित भित्ति चित्र व रंगोली बनाती हैं। विशेष रूप से तब, जब अच्छी खेती होती है या त्यौहार होते है तो ये लोग अपने घरों को अलग-अलग प्रतीकों और चिह्नों से सजाकर सुंदर और खुशहाल वातावरण बनाते है। कला के ये विभिन्न रूप अलग-अलग प्रदेशों के और समय के लोगों की जीवन शैली, सामाजिक सोच और उनकी समझ को दिखाती है।

पाठ 1: मधुबनी चित्रशैली

पाठ 2: वार्ली चित्रशैली

पाठ 3: सांझी कला

पाठ 4: पिथौरा चित्रकला

मॉड्यूल 4 : ज़मीन पर बने चित्र **20 अंक**

प्रस्तावना

ज़मीन पर बनाये जाने वाले चित्र सामान्यत: महिलाओं और लड़कियों द्वारा घर के मुख्य दरवाज़े पर या आँगन में बनाए जाते हैं। ज़मीन को साफ करके पहले डिज़ाइन बनाया जाता है जो सामान्यत: त्यौहार या मौसम से संबंधित होता है। अलग-अलग प्रदेशों में अलग-अलग डिज़ाइन बनाए जाते है। कुछ प्रदेशों में गोल, चोकोर और त्रिकोण आकृतियाँ बनायीं जाती है, तो कहीं पर सीधी लाइन के साथ साधारण प्रतीकों का प्रयोग होता है। इसे लोककला में सामग्री, तकनीक और शैली का चयन कला बनाने के तरीके पर निर्भर करता है इसलिए दूसरी लोककला की तुलना में इस कला में सामग्री का उपयोग, तकनीक का प्रयोग, शैली का अभ्यास थोड़ा अलग होता है।

पाठ 5: रंगोली

पाठ 6: अल्पना

पाठ 7: कोलम (केरल में कलम)

पाठ 8: मंडणा

मॉड्यूल 5 : चित्रों के अन्य माध्यम **20 अंक**

प्रस्तावना

समय और विभिन्न कारणों तथा आवश्कताओं के कारण लोककला का स्वरुप और माध्यम बदल गया है। यद्यपि परिवर्तन के लिए लोगों ने भी इसमें बहुत सारे प्रयोग किए है और इस कला की एक नई कला-शैली को जन्म दिया है, जिसमें कपड़े, मिट्टी, लकड़ी के साथ कठपुतली का चित्र प्रसिद्ध है। ये सभी कला के रूप मनोरंजन के साथ ही सुंदरता के साधन हैं। आजकल बहुत से लोग इस प्रकार की कलाकृति को बनाने और बाजार तक पहुँचाने के काम में लगे हैं। क्योंकि इस कला की माँग न सिर्फ़ भारत, बल्कि विदेशों में भी बहुत ज़्यादा बढ़ रही है।

पाठ 9: कपड़े पर बने चित्र

पाठ 10: मिट्टी की वस्तुओ पर बने चित्र

पाठ 11: लकड़ी के वस्तुओं पर बने चित्र

पाठ 12: कठपुतली का निर्माण